जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

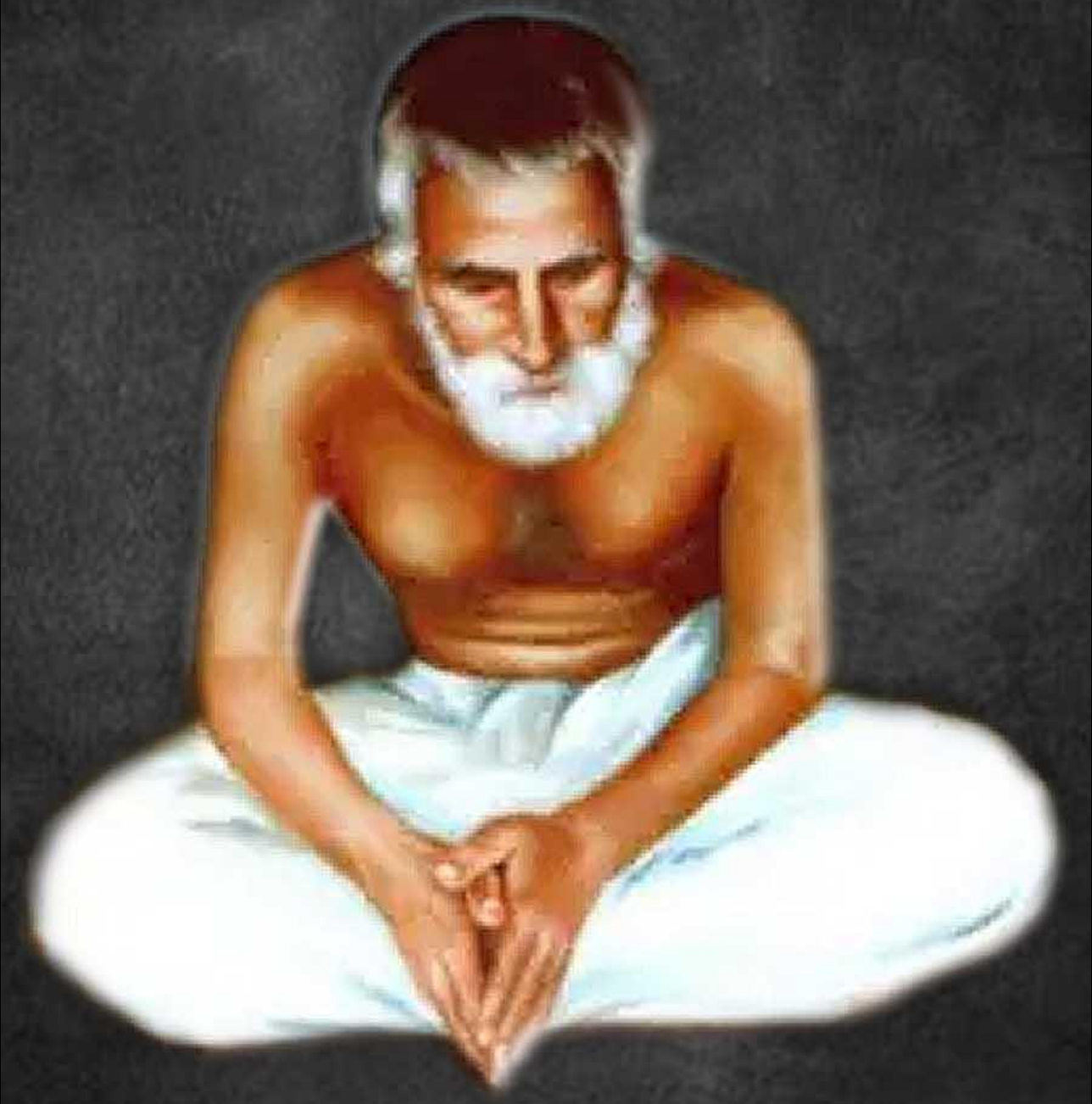

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

भाग – 33

आचार्य के चरणों में अपराध का फल

श्रीलगुरुदेव

प*** नाम के एक व्यक्ति ने श्रीमायापुर में कुछ दिन वास किया था। वह मायापुर से चला गया। बाद में और किसी दिन श्रीमायापुर से भिक्षा करते हुए बाबाजी महाराज के पास आने पर श्रील बाबाजी महाराज ने श्रीमायापुर के सम्वाद के बारे में पूछा। तब प*** ने कहा, "मैं फिर मायापुर नहीं जाऊँगा; कारण सरस्वती प्रभुपाद जी आदि वैकुण्ठ के व्यक्ति हैं; वे ऐश्वर्य - भावापन्न हैं।

मैं ब्रजभजनकारी हूँ, उनके साथ मेरा कोई प्रयोजन नहीं है।" यह सुनकर श्रील बाबाजी महाराज अत्यन्त विरक्त होकर कहने लगे, “एक छोटी सी चिड़िया यदि सागर लाँघने जाए तो हास्यास्पद लगता है। तुम यदि बचना चाहते हो, तो अनिन्दक और तृणादपि सुनीच होकर दिन-रात हरिनाम करो, सबसे पहले वैष्णव अपराध का परित्याग करो। तुम नरक में रहते हुए क्या ब्रज की वार्ता जानोगे? वैकुण्ठ में सरस्वती हैं और वृन्दावन में भी सरस्वती हैं। तुम्हारे कँधों पर पिशाची चढ़ी हुई है। तुम्हें कैसे ब्रज के सरस्वती का पता मिल जाएगा? तब प*** ने कहा 'मैं आपके

पास नवद्वीप में रहूँगा।' श्रील बाबाजी महाराज ने कहा, – "तुम नवद्वीप में वास नहीं कर - सकोगे। वैष्णव-चरणों में अपराध करके कोई नवद्वीप में वास नहीं - कर सकता। योगपीठ - मायापुर के चरणों में के चरणों में तुम्हारा अपराध हुआ है। तुम्हारा अध:पतन अनिवार्य है। मैं मायापुर में भी हूँ, नवद्वीप में भी हूँ। जो मायापुर के प्रति विद्वेष करेंगे, उनका नवद्वीप में वास नहीं होगा। श्रीमायापुर शचीनन्दन का जन्मस्थान है, वह चिन्मय धाम है। वहाँ पर श्रील भक्तिविनोद ठाकुर और सरस्वती प्रभु ने किस प्रकार शुद्ध भाव से हरिभजन का आदर्श दिखा रहे हैं,

तुम्हें वह सब देखने की आखें नहीं हुई !! तुम एक वैष्णव से विद्वेष करके और एक वैष्णव की कृपा प्रार्थना का ढोंग कर रहे हो। "सचमुच श्रील बाबाजी महाराज की वाणी के अनुसार देखा गया कि वह व्यक्ति स्त्रीसंगी और पाषण्डी हो गया एवं भिक्षा करके अवैध पर - स्त्री के विलासोपकरण (विलास की चीजें) इकट्ठे करने लगा ! महत पुरुषों के चरणों में अपराध का यही प्रत्यक्ष फल है।

श्रीलगुरुदेव